Research Journal of Language, Literature and Humanities _____ISSN 2348-6252
Vol. **2(1),** 7-13, February **(2015)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

मुद्राराक्षस में राजनीतिक तत्व

जैन वर्षा
शोध छात्रा,संस्कृतविभाग, बुन्देलखण्ड विश्व विधायल, झांसी उ.प्र., भारत

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 7th December 2014, revised 31th January 2015, accepted 17th February 2015

सारांश

मुद्राराक्षस नई शैली से युक्त भिन्न नाटक है, जिसमें नायिका प्रेम इत्यादि तत्वों का अभाव होने पर भी किसी भी क्षण नीरसता प्रतीत नहीं होती है। यह नाट्य चाणक्य की कूटनीति पर आधारित है। अतः यहाँ राजनीतिक तत्वों का अथाह भण्डार है। इसी तत्व का दिग्दर्शन चन्द्रगुप्त के इस कथन से ही हो जाता है बिना युद्ध के ही आर्य चाणक्य ने दुर्जेय शत्रु सेना को परास्त कर दिया। मुद्राराक्षस में राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा का ऐसा विषय दिखाया है,जो सामयिक होते हुए भी व्यापक है एवं देशकाल की सीमा से बद्ध नहीं है। मैं अपने शोध के माध्यम से इन्हीं तत्वों को प्रकाशित करने का प्रयास करूंगी।

शब्दखोज: मुद्राराक्षस, राजनितिक, तत्व.

प्रस्तावना

संस्कृतसाहित्याकाश में विद्यमान अनेक नक्षत्रों के बीच मुद्राराक्षस एक ऐसा नक्षत्र है जिसका प्रकाश सम्पूर्ण आकाशगंगा को आलोकित कर रहा है। मुद्राराक्षस के प्रणेता आचार्य विशाखदत्त संस्कृत नाटककारों में अनुपम हस्ताक्षर है, जिनकी नैसर्गिक प्रतिभा पद्य एवं गद्य दोनों ही रूपों में इस साहित्य पुष्प में सुवासित हो रही है। प्रकृत ग्रंथ में कवि ने साहित्यिक प्रतिभा के साथ वर्णन सापेक्ष राजनीति को बखूबी स्थान दिया है अतः यह रूपक पदे.पदे वर्णन राजनीतिक के विविध आयामों से परिप्लावित होने के कारण साहित्यिक समाज में राजनीतिक सागर का पर्याय बन गया है। इस नाटक में राजनीति के सभी आयाम अर्थात् राजनीति के प्राचीन सप्तांग सहित प्रायोगिक विवरण आदि उपन्यस्त है। यह नाटक चाणक्य की कूटनीति पर आधारित है। संस्कृत नाटक साहित्य में मुद्राराक्षस का अपना विशिष्ट स्थान है, इसकी लोकप्रियता तो है ही, इसके अतिरिक्त मुद्राराक्षस मेंजो विशेषतायें है, वे उसकी अपनी हैं और ऐसी है, जिसका अनुकरण करना संस्कृत के नाटककारों से परे है। इसकी विशेषता यह है कि यद्यपि इसका लिखने वाला नाट्यशास्त्र का ज्ञाता था, फिर भी उसने नाट्यशास्त्र की परम्परा का अक्षरशः अनुकरण न करके अपनी वैयक्तिक नाट्य प्रतिभा की अमिट छाप छोड़ी है। विशुद्ध कूटनीति को लेकर रचित इस नाटक जैसा दूसरा नाटक संस्कृत साहित्य में उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत नाटक में चाणक्य ने अपनी राजनीति के आधार पर नन्दवंश का पतन कराकर मौर्य वंश की स्थापना एवं नन्दवंश के स्वामीभक्त अमात्य राक्षस को चन्द्रगुप्त का अमात्य नियुक्त किया।

प्रस्तुत शोध पत्र में मुद्राराक्षस मे वर्णित राजनीति के पदे-पदे सुशोभित तत्वों में से स्थालीपुलाकन्याय से कुछ तत्वों को ही यहां पर उपस्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्राचीन राजनीतिक तत्वों का परिचय: प्राचीन भारती मनीषियों ने मनुस्मृति एवं कौटिलीय अर्थशास्त्र आदि ग्रन्थों में राजा एवं उसकी राजनीति के संदर्भ में विशद् विवेचन प्रस्तुत किया है,जो इस प्रकार है-

"स्वाम्यमात्य जनपद दुर्ग कोश दण्डमित्राणि प्रकृतयः" अर्थात्
1. स्वामी (शासक या सम्राट), 2. अमात्य, 3. जनपद या राष्ट्र (राज्य की भूमि या प्रजा), 4. दुर्ग (सुरक्षित नगर या राजधानी), 5. कोश (शासन के कोश द्रव्य राशि), 6. दण्ड (सेना या बल) 7. मित्र।

अंगो को प्रकृति भी कहा जाता है, जिसके संयोग से राज्य का निर्माण होता है। मनुस्मृति के अनुसार राज्य के सात ही अंग बताये गये है -

"स्वाम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रं कोशदण्डौ सुहृत्तथा।
सप्त प्रकृतयो ह्मेताः सप्तांग राज्यमुच्यते।।"

सप्तांगों का वर्णन:-

स्वामी:कतिपय ग्रंथों में स्वामी या शासक की आवश्यकता पर बल दिया गया है। ब्राह्मण ग्रंथों मेंउल्लेख मिलता है कि देवों ने राजा के न होने पर अपनी दुर्दशा देखी और तभी एक मत से उसका चुनाव किया। इससे प्रकट होता है कि सामरिक आवश्यकताओं ने स्वामित्व या नृपत्व को जन्म दिया है। कौटिल्य का कहना है कि जब दण्ड का प्रयोग नहीं होता तो मात्स्यन्याय की दशा उत्पन्न हो जाती है। आचार्य कौटिल्य के अनुसार मात्स्यन्याय से बचाने के लिए दण्डकारी राजा का होना नितान्त आवश्यक बताया गया है। मनुस्मृति भी कहा गया है -

"स राजा पुरुषों दण्डः स नेता शासिता च सः।
चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।।"

उचित दण्ड का प्रयोग करने वाले राजा को मनु ने सत्यवादी विचारकर करने वाला, बुद्धिमान और धर्म, काम तथा अर्थ का ज्ञाता कहा है। ऐसा राज्य राजा का प्रथम अंग है राजा में अधोलिखित गुण होने चाहिए- उच्चकुलशील, धर्मनिष्ठ, सत्यवादी, कृतज्ञ, बलवान, उत्साही, विनयशील, विवेकी, स्पष्टविचारयुक्त, सन्धिविग्रह के सम्यक् ज्ञान वाला, राज्यकोष में वृद्धि करने वाला आदि विशिष्ट गुण होना अनिवार्य है।

अमात्य: राज्य के सात अंगों में दूसरा अंग है अमात्य, जिसे हम सचिव या मन्त्री भी कह सकते है। सदमन्त्रणा तथा अमात्यों की उपयोगिता का उल्लेख करते हुए कौटिल्य ने राज्य के कार्यों की सफल सिद्धि के लिए अमात्यों की नियुक्ति पर विशेष बल दिया है, क्योंकि एक अमात्य से सलाह करके राजा किसी भी कठिनतम कार्य को हल कर सकता है। अमात्यों की योग्यताओं के अन्तर्गत उन्हें कुलीन, स्वदेशोत्पन्न, समर्थ, प्रगल्भ, चतुर, नीतिनिपुण, साहसी, राष्ट्रसेवी, सहिष्णु आदि होना चाहिए। मन्त्रियों या अमात्यों की संख्या, परिषद् का गठन, मन्त्रियों के गुण एवं कर्त्तव्य तथा वेतन आदि का निर्धारण भी स्वविवेक एवं कार्य के आधार पर राजा को ही करना चाहिए।

राष्ट्र या जनपद : राष्ट्र का तीसरा अंग जनपद है। इसका अर्थ राष्ट्र, देश अथवा स्वजातीय राज्य है। शासन व्यवस्था और सुख सुविधा की दृष्टि से कौटिल्य ने समग्र राष्ट्र को दो भागोमें विभक्त किया है. **'पुर और जनपद'** पुर का अर्थ राजधानी और जनपद का अर्थ 'राष्ट्र' से है। जनपद का अभिप्राय है 'जनयुक्त भूमि'। अर्थशास्त्र में जनपद के लिए जनसंख्या, निश्चित और प्राकृतिक सीमाबद्ध भूक्षेत्र,राज्यसत्ता की स्थापना, सैन्य शक्ति तथा आर्थिक अवस्था को आवश्यक अंग बताया गया है। राष्ट्र की वास्तविक शक्ति जनसमाज की विश्वसनीयता से युक्त होती है। आचार्य कौटिल्य पड़ोसी राज्यों के विषय में भी विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि समीपवर्ती राज्य अधिक शक्तिशाली नहीं होने चाहिए। प्रजा के सद्गुण एवं संगठित शक्तिशासन को श्रेयस्कर स्थान प्रदान करते है।

दुर्ग: राज्य की रक्षात्मक और आक्रामक शक्ति दोनों का प्रतीक दुर्ग सात अंगों में से एक है। कौटिल्य ने राज्य पर विशेष बल देते हुए युद्धोचित दुर्गो के निर्माण को आवश्यक बताया है। दुर्ग मजबूत और ऐसे होने चाहिए जिसमें सेना के लिए अच्छी मोर्चा बन्दी हो, पानी, भोज्य सामग्री तथा बारूद का उचित प्रबन्ध हो। शत्रु से राज्य की रक्षा करने में दुर्ग का विशेष महत्त्व है। यदि दुर्ग न हो तो कोश पर शत्रु सुगमता से अपना अधिकार कर लेगा। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र मेंदुर्गो के निर्माण तथा उनमें से एक में राजधानी बनाने के विषय में विस्तार से उल्लेख किया है। उन्होंने चार प्रकार के दुर्गो का उल्लेख किया है।

"चर्तुर्दशं जनपदान्ते साम्परायिकं दैवकृतं दुर्ग कारयेत् ; अन्तर्दीप स्थलं वा निम्ना- वरुद्धमौदकं, प्रास्तरं गुहां वा पार्वतं, निरुदकस्तम्बमिरिणं वा धान्वनं, खञ्जनोदकं स्तम्भगहनं वा वनदुर्गम्। तेषां नदी पर्वत दुर्ग जनपदारक्षस्थानं धान्वनवन दुर्गमटवीस्थानम् आपद्यपसारो वा।"

आचार्यकौटिल्य ने प्रथम दो प्रकार के दुर्ग जनसंकुल स्थानो की सुरक्षा के लिए है और अन्तिम दो प्रकार के दुर्ग जंगलों की रक्षा के लिए है। मनु ने राजधानी को राष्ट्र के पूर्व रखा है। राजधानी देश की सम्पत्ति का दर्पण थी और यदि वह ऊंची-ऊंची दीवारों से सुदृढ़ रहती थी, तो सुरक्षा का कार्य भी करती थी

अतएव राजा को दुर्ग निर्माण करना परमावश्यक था। मनु ने छः प्रकार के दुर्ग बतलाये हैं

"धन्वदुर्ग महीदुर्गमब्दुर्ग वाक्षर्मेव वा।नृदुर्ग गिरिदुर्ग वा समाश्रित्य वसेत्पुरम्।।"

कोश: कौटिल्य का कहना है कि जिस राजा का कोष रिक्त हो जाता है वह नगरवासियों एवं ग्रामवासियों को शोषण करने लगता है। राज्य के समस्त कार्य व्यापार कोष पर निर्भर रहते है। अतः राजा को सर्वप्रथम कोष पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा सेना की प्राप्ति, कोष और सेना से होती है। राजकोष में स्वर्ण, रजत, सोने की मुद्राओं, विविध रंगों व भारी वजन के रत्नों से पूर्ण होना चाहिए और इसे इतना पर्याप्त होना चाहिए कि उससे निर्वाह हो सके।

दण्ड : राज्य की सुरक्षा तथा विस्तार के लिए सैन्य शक्ति का संगठन आवश्यक है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं अन्य ग्रन्थों में बल को ही दण्ड कहा गया है। कौटिल्य के अनुसार दण्ड वह साधन है, जिसके द्वारा आन्वीक्षिकी, त्रयी एवं वार्ता का स्थायित्व एवं रक्षण अथवा योगक्षेम होता है। राजा अपने बल से राज्य की रक्षा सम्यक् रूपेण करता है। आचार्य कौटिल्य ने सेना की सात श्रेणियों का उल्लेख किया है -
1. मौल सेना, 2. भृत्य सेना, 3. श्रेणी सेना, 4. मित्र सेना, 5. अमित्र सेना, 6. आटविक सेना, 7. औत्साहिक सेना.

मित्र: राज्य संस्था के लिए यह भी आवश्यक है कि कतिपय अन्य राज्यों से मित्रता का सम्बन्ध स्थापित किया जाये। विपदा, अशान्ति तथा आवश्यकता की घड़ी में सर्वाधिक सहायता मित्र वर्ग द्वारा ही प्राप्त होती है। आचार्य कौटिल्य ने राजा के लिए अच्छे मित्र के गुणों का वर्णन करते हुए कहा है कि"राजा सेना या भूमि पाकर उतना समृद्धिशाली नहीं होता जितना कि अटल मित्र पाकर।"

इस प्रकार से स्पष्ट है कि सप्तांगों से ही राज्य का स्वरूप स्पष्टतया निर्धारित होता है। इन अंगों में से किसी के भी विकृत होने पर सम्पूर्ण राज्य पर उसका प्रभाव पड़ता है।

मुद्राराक्षस में राजनीतिक तत्व: नाटककार विशाखदत्त ने अर्थशास्त्र एवं मनुस्मृत्यादि ग्रन्थों का पूर्णतः अवगाहन कर मुद्राराक्षस में समाहार किया है। इस नाटक को जीवन प्रदान करने वाला पात्र वस्तुतः चाणक्य है। आचार्य चाणक्य ने नन्दवंश का नाश कराकर अपने पूर्ण भक्त शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य को राज्य सिंहासन पर बैठा तो दिया अवश्य, परन्तु नन्दराज के स्वामीभक्त अमात्य राक्षस को अपनी कूटनीति से अपने पक्ष में लाकर उसे चन्द्रगुप्त का मन्त्री भी बना दिया है। इस बुद्धिकौशल का संघर्ष ही नाटक का मेरूदण्ड है। प्रकृत नाटक में चाणक्य एवं अमात्य राक्षस के ब्याज से विशाखदत्त ने राजनीति के समग्र आयामों को प्रस्तुत किया है, जिनका यथोचित स्वरूप कुछ इस प्रकार है-

चाणक्य और राजनीति: मुद्राराक्षस नाटक में प्रथम पदार्पण से लेकर अन्तिम फ़लाप्राप्ति पर्यन्त आचार्य चाणक्य द्वारा प्रति पद किये गये प्रयास सर्वथा राजनीति से ओत-प्रोत हैं, जिनके अध्ययन मात्र से राजनीति का समग्र चित्र पाठक स्वयं अनुभूत कर सकता है। चाणक्य द्वारा नाटक में अन्य पात्रों जैसे चन्द्रगुप्त, क्षपणक,शकटदास, पवर्तक, मलयकेतु आदि के साथ किया गया व्यवहार राजनीतिक तत्वों का अनुपम उदाहरण है।

स्वपक्षीय जनों के प्रति राजनीति: प्रकृत नाटक में आचार्य चाणक्य ने समस्त पात्रों के साथ कूटनीतिक आचरण किया है। इस व्यवहार से उनके अपने पक्ष के व्यक्ति भी नहीं बच पाये है। चाणक्य ने समस्त कार्यों को इतनी गूढ़ता एवं रहस्यात्मक ढंग से किया है कि पास मौजूद उनके अपने पक्ष के व्यक्ति भी चाणक्य की राजनीति को समझने में अशक्त है।

गुप्तचरों के प्रति राजनीति: चाणक्य ने अपने आसपास मौजूद या अपने से दूर शत्रु पक्ष में भेजे गये गुप्तचरों के प्रति भी राजनीतिक आचरण किया है। आचार्य चाणक्य ने अपने सहपाठी मित्र विष्णुशर्मा को अपनी कार्यसिद्धि के लिए क्षपणक वेश में पाटलिपुत्र बुला लिया और नन्द के अमात्यवर्ग का मंत्री बनवा दिया।

"अस्ति चास्माकं सहाध्यायि मित्रं विष्णुशर्मा नाम ब्राह्मणः स चौशनस्यां दण्डनीत्यां चतुःषठटयड्गें ज्योतिः शास्त्रे च परं प्रावीण्यमुपगतः। स च मया क्षपणकलिड्ग नन्दवध प्रतिज्ञानन्तरमेव कुसुमपुरमुपनीय, सर्वनन्दामात्यैः सहसख्यं ग्राहितः।"

इसी क्रम में चाणक्य ने स्वयं लेख नहीं लिखा यह भी उसकी राजनीति का एक अहम हिस्सा है कि वह अपने गुप्तचर के द्वारा शकटदास से एक पत्र लिखवाता है-

"चाणक्यः वत्स! श्रोत्रियाक्षराणि प्रयत्नेनलिखितान्यपि नियतम स्फुटानि भवन्ति, तदुच्यतामस्मद्वचनात्सिद्धार्थकः। एभिरक्षरः केनापि, किमापि, कस्यापि, स्वयं वाच्याम् इति, अदतबाह्य नामानं लेखं शकटदासेन लेखयित्वा मामपतिष्ठसव, न चाख्येयमस्मै चाणक्यो लेखयती, ति।।"

पञ्चम् अंक में सिद्धार्थक वह पत्र लेकर राक्षस की सेवा में उपस्थित होता है। उस पत्र के द्वारा चाणक्य और मलयकेतु में फूट डालने में समर्थ होता है। इसी प्रकार चाणक्य ने सिद्धार्थक से शकटदास को वध्यभूमि पर ले जाने एवं वध करने का नाटक करते हुए बताया है वहीं दूसरी ओर सिद्धार्थक के द्वारा ही शकटदास वध्यभूमि से भगाकर राक्षस के पास पहुंचता है और मित्र की रक्षा किये जाने के सन्दर्भ में राक्षस की सेवा में रहने को कहता है। आचार्य चाणक्य अपने एक कार्य के बारे मेंअपने ही किसी दूसरे गुप्तचर को पता नहीं लगने देता है।

चन्द्रगुप्त के प्रति राजनीतिः चाणक्य ने नन्दवंश का विनाश कर मौर्य वंश की स्थापना की एवं अमात्य को चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाने के लिए राजनीति की। चाणक्य ने सभी प्रजाजनों को दिखाने के उद्देश्य से चन्द्रगुप्त को एकान्त में कृतक कलह का आदेश दिया-

"कृतककलहं कृत्वा स्वतन्त्रेण त्वया किञ्चत् कालं व्यवहत्तर व्यमित्यार्योपदेशः" आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त से बनावटी झगड़ा करके राक्षस और शत्रु मलयकेतु के बीच की मित्रता को समाप्त करा देता है

"मद्भृत्यैःकिल सोऽपि पर्वतसुतो व्याप्तः प्रतिष्ठान्तरैरुद्युताश्च नियोगसाधन विधौ सिद्धार्थकाद्यायाः स्पशाः।कृत्वा सम्प्रति कैतवेन कलहं मौर्यन्दुना राक्षसंभेत्स्यामि स्वभतेन भेदकुशलो ह्ओष् प्रतीपं द्विषः।।"

आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त को कौमुदी महोत्सव मनाने के लिए मना करते है। आर्य चन्द्रगुप्त वैतालिको को एक-एक लाख स्वर्ण मुद्रायें देने की घोषणा करता है तब चाणक्य कुरद्ध होकर उससे कहता है कि -

चाणक्य :-(सक्रोधम्द्ध) वैहीनरे! तिष्ठ तिष्ठ न गन्तव्यम्।वृषल!किमयमस्थाने एवं महानथौत्सर्गः क्रियते?

राजाः- आर्येणैव सर्वतो निरुद्धचेष्ठाप्रसरस्य मम बन्धनमिव राज्यं न राज्यमिव।

चाणक्यः वृषल! स्वयमनभियुक्तानां राज्ञामेते दोषाः सम्भवन्ति। तद्यदि न सहसे, तदा स्वयमेवाभियुज्यस्व।

चाणक्य करभक को दिखाने के लिए स्वयं की बनायी हुए योजना का उद्घाटन करता है और स्वयं अपने पद का त्याग करता है।

भागुरायण के प्रति राजनीतिः चाणक्य अपने शिष्य को आदेश देता है कि वह मलयकेतु के पास जाकर रहे एवं अमात्य के प्राणों की रक्षा करें क्योंकि वह अमात्य को चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाना चाहता था। जब मलयकेतु को सिद्धार्थक के द्वारा यह पता चलता है कि उसके पिता की हत्या अमात्य द्वारा करवायी गयी है तब वह अमात्य से बदला लेना चाहता है परन्तु भागुरायण अमात्य के प्राणों की रक्षा मलयकेतु को समझाकर करता है।

शत्रु पक्ष में राजनीतिः आचार्य चाणक्य सम्पूर्ण नाटक में अमात्य राक्षस की अपेक्षा राजनीति के दावपेंचों में शत्रु पक्ष पर सर्वथा हावी ही दिखाई देते है। चाणक्य ने शत्रुओं के पक्ष मेंअमात्य राक्षस या मलयकेतु या उसके गुप्तचर सभी को राजनीति के ऐसे दावपेंच में बुना है कि वे स्वयं विषकन्या आदि माध्यमों से अपने ही जाल में फंसते नजर आ रहे है।

अमात्य राक्षस के प्रति राजनीतिः चाणक्य स्वयं नन्दवंश के नाश की सूचना देता है और प्रतिज्ञा करता है कि वह नन्दवंश के महामन्त्री राक्षस को अपने वश में करके चन्दगुप्त को मुख्यमन्त्री बनाकर उसका राज्य सुदृढ़ कर देगा। जब राक्षस विषकन्या के द्वारा चन्द्रगुप्त को मरवाना चाहता है तब चाणक्य अपनी कूटनीति से ही विषकन्या द्वारा पवर्तक की हत्या करवाता है -

चाणक्य:- अस्मद्रिपुपक्षे बद्धपक्षपातः क्षपणक इति कथमवगंत भवता ? चर: - येन स अमात्यराक्षसेन प्रयुक्ता विषकन्यका देवे पर्वतेश्वरे समावेशिता।

चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से कहा था कि पवर्तक के आभूषण ब्राह्मणों के लिए दे दिये जाये और अपनी बुद्धि के द्वारा ही उन आभूषणों को गुप्तचरों को बेच देता है और कुछ समय पश्चात् वे आभूषण सिद्धार्थक के पास मिलते हैं इससे मलयकेतु को विश्वास हो जाता है कि राक्षस ने ही उसके पिता पवर्तक को मरवाया है। जब अमात्य, सपेरे के वेश में अपने गुप्तचर विराधगुप्त के द्वारा चाणक्य और चन्द्रगुप्त में फूट डलवाना चाहता है -

"जार्णति तन्तजुति जहटिठअं मंड्लं अर्हिलिहंति।जे मन्तरक्खणपरास्ते सप्पंणराहिबे उबचरंति।।"

चाणक्य को इसका पूर्वानुमान था इसलिए वह ऐसा ही प्रदर्शन करता है। अमात्य राक्षस को प्रकट होने के लिए उसके मित्र चन्दनदास को फांसी की सजा दिलवाता है जिसके भय से अमात्य जरूर प्रकट होगा। ऐसा पूर्ण विश्वास चाणक्य को हो ही जाता है।

पवर्तक के प्रति राजनीति : अमात्य ने मौर्य वंश के चन्द्रगुप्त मौर्य को समाप्त करने के लिए विषकन्याको नियुक्त किया था, परन्तु चाणक्य की निपुणता एवं बुद्धि कौशल के प्रयोग से वह अपने राजा चन्द्रगुप्त को तो बचा लेता है और साथ ही पवर्तक की हत्या विषकन्या द्वारा करा देता है।

मलयकेतु के प्रति राजनीति: चाणक्य अपनी कार्य सिद्धि के लिए मलयकेतु के पिता पवर्तक की हत्या करवाता है और प्रचार कर देता है कि राक्षस ने उसे मरवाया है। मलयकेतु और राक्षस दोनों मिलकर चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने की योजना बनाते हैं परन्तु सिद्धार्थक मुद्रा लेने के बहाने से भागुरायण के पास जाकर कहता है-

भागुरायण- भदन्त! अहमपि मुद्रां न दास्यामि,

क्षपणक-(स्वगतम्) का गतिः निवेदयामि, श्रृणोतु उपासक: अस्ति तावदहमधन्यः प्रथमं पाटलिपुत्रे निवसन् राक्षसस्य मित्रत्वमुपगतः । तस्मिन्नवसरे राक्षसेन गूढं विषकन्या प्रयोग समुत्पाद्य द्यातितो देवः पर्व्वतेदूर: ,

मलयकेतु : कथं राक्षसेन घातिस्तातं: न चाणक्येन ?

इस प्रकार मलयकेतु और राक्षस का मैत्री सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।

शत्रु के मित्रो के प्रति राजनीति: चाणक्य ने राक्षस के तीन परममित्र जीवसिद्धि,शकटदास और चन्दनदास के प्रति भी अपनी कूटनीति दिखाई है। इनके प्रति दण्ड का विधान राक्षस को प्रकट करने के लिए किया गया साथ ही महाराज पवर्तक की हत्या करने के लिए दण्ड दिया गया। क्षपणक जो चाणक्य के द्वारा ही राक्षस का परम मित्र बना था और उसी क्षपणक के माध्यम से चाणक्य के आदेशानुसार ही विषकन्या द्वारा पवर्तक की हत्या करवायी। उसके अपराध की घोषणा करते हुए अपमान के साथ नगर से निर्वासित कर दिया गया।

शकटदास राक्षस की चाल चलता हुआ इसी पाटलिपुत्र के चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य के प्राणों का शत्रु बना हुआ है। इसी राजद्रोह अपराध की घोषणा के साथ-साथ फांसी पर चढ़ा दिया और उसके बाल-बच्चों को कारागार में बन्दकर दिया जाये। उसे राजद्रोह के अपराध की घोषणा के साथ फांसी पर चढाया जाये ऐसी सार्वजनिक घोषणा करवाकर शकटदास और उसके परिवार को कब्जे में कर लेता है।चन्दनदास जो पाटलिपुत्र का सबसे बड़ा जौहरी है और जिसके घर में अमात्य अपना परिवार सुरक्षित रखकर पाटलिपुत्र से बाहर निकल गया है। इस अपराध के कारण उसे फांसी की सजा की घोषणा की जाती है।

अमात्य राक्षस और राजनीति: मुद्राराक्षस नाटकमें राक्षसद्वारा किये प्रयास सर्वथा राजनीति से ओत- प्रोत है, जिनके अध्ययन मात्र से ही राजनीति का समग्र चित्रण पाठक स्वयं अनुभूत कर सकता है। अमात्य द्वारा नाटक मेंअन्य पात्रों जैसे चन्द्रगुप्त, चाणक्य, चन्दनदास, मलयकेतु आदि के साथ किया गया, व्यवहार राजनीतिक तत्वों का अनुपम उदाहरण है।

स्वपक्षीय जनों के प्रति राजनीति : प्रकृत नाटक में अमात्य ने समस्त पात्रों के साथ कूटनीतिक आचरण किया है। इस व्यवहार से उनके अपने पक्ष के व्यक्ति भी नहीं बच पाये है।

मलयकेतु के प्रति राजनीति : अमात्य ने अपनी कार्यसिद्धि के लिए मलयकेतु के पिता की हत्या करवायी एवं मलयकेतु को आचार्य चाणक्य ने हत्या करवायी, ऐसाकहा। अमात्य नहीं चाहता था कि चन्द्रगुप्त राजा बने तो उसने मलयकेतु को राजा बनाने पर विचार किया और मलयकेतु के साथ मिलकर चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने की योजना बनाता है।

कथंप्रकाशतां शतोऽयमर्थः पौरेषु यथा किल 'नन्दकुलविनाशजनितरोषो' राक्षस पितृवधानार्षितेन सकलनन्द राज्य परिपणन प्रोत्साहितेन पवर्तक पुत्रेण

मित्र के प्रति राजनीति : राक्षस अपने मित्रों के प्रति भी राजनीति प्रदर्शित करता है वह अपने परिवार को अपने मित्र चन्दनदास के घर पर सुरक्षित छिपा देता है और स्वयं भाग जाता है। इस प्रकार वह अपनी राजनीति में सफल हो जाता है।

गुप्तचरों के प्रति राजनीति : अमात्य अपनी कूटनीति से चन्द्रगुप्त और चाणक्य की मित्रता समाप्त करवाना चाहता था इसलिए अमात्य ने जीर्णविष को चन्द्रगुप्त के दरबार में गुप्तचर के रूप में भेजा। चाणक्य और चन्द्रगुप्त मे कृतककलह का वर्णन तृतीय अंक मेंहै। जिससे अमात्य को यही ज्ञात होता है कि जो वह सोचता था वह हुआ।

शत्रुपक्षों के प्रति राजनीति: अमात्य सम्पूर्ण नाटक में चाणक्य की अपेक्षा राजनीति के दावपेंचों में शत्रु पक्ष पर सर्वथा भारी दिखाई दिया है। अमात्य ने शत्रु पक्ष मेंचाणक्य, चन्द्रगुप्तादि सभी को राजनीति के दावपेंच में बुना है।

चन्द्रगुप्त के प्रति राजनीति: नन्दवंश का महामन्त्री राक्षस अपने स्वामी के प्रति अनन्य भक्ति रखता था अतः नन्दवंश के पतन के बाद वह नहीं चाहता था कि वह चन्द्रगुप्त राजा बने इसलिए वह विषकन्या को चन्द्रगुप्त को मारने के लिए नियुक्त करता है। अमात्य विराधगुप्त को सपेरे के वेश में चाणक्य और चन्दगुप्त के फ़ूट पैदा करने के लिए भेजता है।

"येन स अमात्यराक्षसेन प्रयुक्ता विषकन्यका देवे पर्वतेश्वर समावेशिता"

चाणक्य के प्रति राजनीति: नन्दवंश के विनाश से विक्षुब्ध राक्षस पितृबद्ध के कारण क्रुद्ध किंवा सम्पूर्ण नन्द साम्राज्य पर अधिकार प्राप्ति की शर्त से पर्वतकपुत्र मलयकेतु से सन्धि करके अपनी कूटनीति से चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने के लिए तैयार करता है एवं जीर्णविष द्वारा चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य की मित्रता समाप्त करवाता है।

निष्कर्ष

आचार्य चाणक्य ने सम्पूर्ण नाटक में कूटनीति का विशद् विवेचन प्रस्तुत किया है। यहाँ युद्ध वीर सैनिकों से नहीं होता है यहाँ तो पूरा नाटक एक विशाल अखाड़ा है जिसमें दो अक्खड़ पहलवान पर्दे की ओर से अपना दावपेंच दिखाकर दर्शकों को आश्चर्यचकित किया करते है। चाणक्य ही इस नाटक के घटनाचक्र का एकमात्र नियन्ता है किन्तु वह जो कुछ करता है अपने लिए नहीं, अपने स्वार्थ भाव से नहीं, अपितु चन्द्रगुप्त के लिए और मौर्य साम्राज्य की दृढ़मूलता और सम्पन्नता के लिये। चाणक्य ने अपनी राजनीति से नन्दवंश का नाश कराकर अमात्य राक्षस को चन्द्रगुप्त का अमात्य नियुक्त किया। यह नाटक चाणक्य की कूटनीति पर आधारित है अतः यहां राजनीतिक तत्वों का अथाह भण्डार है। मुद्राराक्षस में राजनीतिक महत्वाकांक्षा का ऐसा विषय दिखाया है जो सामयिक होते हुए भी व्यापक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, गिरिधर गोपाल.9/294, मनुस्मृति, वाराणसी :चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान (**2005**)
2. शर्मा, गिरिधर गोपाल, 7/17 मनुस्मृति, पृष्ठ सं 154, वाराणसी :चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान (**2005**)
3. गैरोला, वाचस्पति, 2/3/19, कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्, पृ0 सं0 85, दिल्ली :चौखम्भा विद्याभवन (**2011**)
4. शर्मा, गिरिधन गोपाल, 7/70 मनुस्मृति, पृ0सं0, 176, वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान (**2005**)
5. सिंह, सत्यव्रत. प्रथम अंक, विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस, पृ0सं0 क्रमशः 31,47, वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस (**2011**)

6. सिंह, सत्यव्रत. तृतीय अंक, विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस, पृ0सं0 क्रमशः122,131, वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरिज ऑफिस (**2011**)

7. सिंह, सत्यव्रत.2/1, विशाखदत्तरकृत मुद्राराक्षस, पृ0स0 68 वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस (**2011**)

8. सिंह, सत्यव्रत. पंचम अंक विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस, पृ0सं0 212, 213 वाराणसी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस (**2011**)